नाट्यम्

95–98

शूद्रक विशेषांक

प्रधान संपादक
राधावल्लभ त्रिपाठी

संपादक
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

प्रबन्ध संपादक
सञ्जय कुमार

संपादक मण्डल
नौनिहाल गौतम, रामहेत गौतम
शशिकुमार सिंह, किरण आर्या

प्रकाशक
नाट्य परिषद्, संस्कृत विभाग
डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) सागर (म.प्र.)

नाट्यम् 95-98, अक्टूबर 2020-सितम्बर 2021
रंगमंच एवं सौन्दर्यशास्त्र की पूर्वसमीक्षित त्रैमासिक शोधपत्रिका
महाकवि शूद्रक विशेषांक
ISSN : 2229-5550
UGC Care List Journal, S.N.70
नाट्य परिषद् **(पंजीकरण क्र. 100066)**
संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
दूरभाष-फैक्स (कार्यालय) 07582-264366 पिन-470 003

Natyam : A Quarterly Journal of theatre and aesthetics
published by Natya Parisad. Deptt. of Sanskrit,
Doctor Harisingh Gour University, Sagar,
Madhya Pradesh-Pin-470 003. India.
Phone-Fax (off.) : 07582-297149

सदस्यता शुल्क :
विशेषांक - 200/- रु.
प्रत्येक अंक - 100/- रु., वार्षिक - 400/- रु.
पांच वर्षीय सदस्यता व्यक्तिगत - 2500/- रु.
पांच वर्षीय सदस्यता (संस्थागत) - 5000/- रु.
इस अंक का मूल्य - 200/- रु.

यह शुल्क मनीआर्डर, चेक या नगद दिया जा सकता है
जो नाट्य परिषद्, संस्कृत विभाग, डॉक्टर हरीसिह गौर विश्वविद्यालय, सागर के नाम देय होगा।

पत्रव्यवहार :
प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003
e-mail : sanskritsagar1946@gmail.com
natyamsagar1982@gmail.com
07582297149 Mob : +919425656284
© सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रण : अजय जैन, **अमन प्रकाशन** नमक मंडी,
कटरा, सागर (म.प्र.) मो. 9826434225

नाट्यम् में प्रकाशित नाटकों के अनुवादों/रूपान्तरों या किसी भी अन्य सामग्री की किसी भी रूप में प्रस्तुति के लिए *नाट्य परिषद्* से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।
प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति अथवा विचारों से *नाट्य परिषद्*, संपादक या संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रम

1. **महाकवि शूद्रक का पाण्डित्य** 7
   आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
2. **मृच्छकटिक का घटनाश्लेष और रंगमंच** 18
   राधावल्लभ त्रिपाठी
3. **मृच्छकटिकम् : पुनर्विचार और परिवर्तन का दृष्टिवाही प्रकरण** 28
   चेतना वेदी
4. **साहित्य और न्यायतंत्र** 36
   बजरंग बिहारी तिवारी
5. **मृच्छकटिक में वर्णित समाज** 62
   मैत्रेयीकुमारी
6. **मृच्छकटिक में गणिका समाज : शास्त्रीय प्रतिबिम्ब** 69
   समीनाज खान
7. **मृच्छकटिक में स्त्री-जीवन** 81
   तेजनाथ पौडैल
8. **मृच्छकटिक में लोक-संस्कृति** 90
   सञ्जय कुमार
9. **मृच्छकटिक में सनातन धर्म-दर्शन** 100
   सत्यप्रकाश दुबे
10. **मृच्छकटिक में धार्मिक प्रवृत्तियाँ** 106
    हेमन्त शर्मा
11. **मृच्छकटिक में मूर्ति एवं वास्तुकला** 117
    सुरेन्द्र कुमार यादव
12. **मृच्छ्कटिक में आयुर्वेदीय सुभाषित** 126
    गोपाललाल मीना
13. **मृच्छकटिक में न्याय-व्यवस्था** 133
    शशिकुमार सिंह
14. **मृच्छकटिक में ज्ञान के विविध आयाम** 144
    एस. एस. गौतम

15. **मृच्छकटिक में नाटकीय तत्त्व** 153
रूबी
16. **मृच्छकटिक की नाट्यशास्त्रीय समीक्षा** 160
जयप्रकाश नारायण
17. **मृच्छकटिक में संवाद-योजना** 170
गौरव सिंह
18. **मृच्छकटिक में प्राकृत-प्रयोग** 175
सन्दीप कुमार यादव
19. **'क' प्रत्ययप्रेमी कवि शूद्रक** 182
किरण आर्या
20. **मृच्छकटिक में राजनैतिक परिदृश्य** 187
शान्तिलाल साल्वी
21. **मृच्छकटिक में अलङ्कार** 192
रामहेत गौतम
22. **मृच्छकटिक का सूक्तिसौन्दर्य** 210
नौनिहाल गौतम
23. **मृच्छकटिक में मानवमूल्य** 215
राजेन्द्र प्रसाद
24. **मृच्छकटिक में विश्रान्त सूच्य कथांश** 222
ओमप्रकाश राजपाली
लेखक परिचय 231

21
मृच्छकटिक में अलङ्ंकार

रामहेत गौतम

मृच्छकटिक अर्थात् मिट्टी की गाड़ी नाम से एक गंभीर अर्थ को धारण करने वाली रचना है। एक मरणशील भौतिक शरीर रूपी गाड़ी के सहारे सम्पूर्ण जीवन को ढोने की जद्दो-जहद निरन्तर चलती रहती है। मृच्छकटिक की कथा समाज में व्याप्त असन्तुष्टी पात्रों के माध्यम से कवि शूद्रक के द्वारा उद्घाटित की गई है। रोहसेन मिट्टी की गाड़ी से असन्तुष्ट है तथा सोने के खिलौनों के लिए लालायित है। चारुदत्त धूता से असन्तुष्ट है मगर वसन्तसेना के प्रति लालायित है। शकार राजसम्पदा से सन्तुष्ट नहीं है वसन्तसेना के प्रति लालायित है। वसन्तसेना धनसम्पन्न होते हुए भी चारुदत्त के प्रति लालायित है। शर्विलक-मदनिका के प्रति लालायित है। ये सभी अपने जीवन को अलङ्कृत करने की अभिलाषा रखते हैं। कवि शूद्रक अपनी इस कृति को घटना संयोजन तथा पात्र-चरित्र निर्माण तथा चरित्र की अभिव्यक्ति से सुगठित करते हैं तथा अपने काव्य के शब्दार्थ युगल को स्वाभाविक अलङ्कारों से अलङ्कृत करते हैं। कवि ने अपनी कृति को अलङ्कारों को लादकर बोझिल बनाने की अपेक्षा कविता नायिका के स्वाभाविक अङ्गलावण्य को यथा अवसर अनुकूल अलङ्कारों से संवारा है। 5वीं शती के कवि शूद्रक के पश्चात्वर्ती काव्यप्रकाशकारमम्मट (12वी शती) अलङ्कार की परिभाषा देते हैं कि-
उपकुर्वन्तितंसन्तं येऽङ्गद्वारेणजातुचित्। हारादिवदलङ्कारास्तेनु- प्रासोपमादयः।।[1]
आईये नजर डालते हैं –

शब्दालङ्कार प्रयोग -

वक्रोक्ति अलङ्कार-

वसन्तसेना पुष्पकरण्डक बन में जाती चारुदत्त की गाड़ी न रोकने पर चन्दनक कहता है कि-

को तंगुणारविन्दं सील-मिअंकजणो ण जाणादि?।
आवण्णदुक्ख-मोक्खंचउ-साअर- सारअंरअणं।।
(कस्तंगुणारबिन्दंशीलमृगाङ्क जनो न जानाति?
आपन्न-दुःखमोक्षंचतुःसागरसारंरत्नम्।।)[2]

गरीबों के सहारा, चतुःसागर रत्नभूत, गुण-कमल, शीतल चन्द्र के समान चारुदत्त को कौन नहीं जानता? चन्दनक के इस कथन को स्रोता वीरक समझ जाता है कि सभी जानते हैं। यहाँ पर काकु वक्रता होने से वक्रोक्ति अलङ्कार है। जिसका लक्षण इस प्रकार है। यदुक्तमन्यथावाक्यं, अन्यथोन्येनयोज्यते। श्लेषेणकाक्वावाज्ञेया सा वक्रोक्तिस्तथा द्विधा।।[3] अन्य प्रयोग - 6-9,10,8-13,16

अनुप्रास अलङ्कार- वर्णसाम्यमनुप्रासः।[4] अर्थात् जहाँ स्वर भेद हो या न हो लेकिन व्यंजनों का साम्य हो तो अनुप्रास अलंकार होता है। मृच्छकटिक में अनेक वार अनुप्रास अलङ्कार का प्रयोग हुआ है। एक उदाहरण दृष्टव्य है-

जदिच्छशेलम्बदशा-विशालंपाबालअंशुत्तशदेहिंजुत्तम्।
मंशं य खादुंतहतुट्ठिकादुंचुहूचुहूचुक्कुचुहू चुहूत्ति।।[5]

यहाँ उत्तरार्ध में खादुं---कादुं में अनेक वर्णों की आवृत्ति होने से यहाँ सूत्र सोऽनेकस्यसकृत्पूर्वः(अनेक की एक वार आवृत्ति) होने से अनुप्रास का छेकानुप्रास भेद है। साथ ही चुहू के च और ह वर्णों की अनेक वार आवृत्ति होने से सूत्र- एकस्याप्यसकृत्परः (एक अथवा अनेक वर्णों की अनेक वार आवृत्ति) होने से वृत्यानुप्रासअलङ्कार है। अन्य प्रयोग- 5-18, 8-22, 10-55,58

यमक अलङ्कार-अर्थेसत्यर्थभिन्नानांवर्णानां सा पुनः श्रुतिः। यमकम्। काव्यप्रकाश सूत्र- 116 अर्थात् सार्थक लेकिन भिन्न अर्थ में वर्णों की उसी क्रम से पुनः श्रवण (आवृत्ति) यमक शब्दालङ्कार होता है। मृच्छकटिक में इसका प्रयोग निम्नलिखित है।

णव-बन्धण-मुक्काएविअगद्दहीएहा! ताडिदोम्हिगद्दहीए।
अङ्गलाअमुक्काएविअशत्तीएघडुक्कोविअघादिदोम्हिशत्तीए।।[6]

यहाँ पूर्वार्द्ध में प्रथम 'गद्दहीए' गदही के अर्थ में है जबकि द्वितीय 'गद्दहीए' वराटिक अर्थात् कौड़ी (पाशा) के अर्थ में है। इसी प्रकार उत्तरार्द्ध में 'शत्तीए' प्रथम वार अस्त्रविशेष के अर्थ में है जबकि द्वितीय 'शत्तीए' यष्टिविशेष(पाशा) के अर्थ में है।

यहाँ गद्दहीए तथा शत्तीए दोनों की सार्थक एवं भिन्न-भिन्न अर्थों में आवृत्ति होने से यमक अलंकार है।

इदानींसुकुमारेस्मिन्निःशङ्कंकर्कशाःकशाः।
तवगात्रेपतिष्यन्तिसहास्माकं मनोरथैः।।[7]

इस समय तुम्हारे सुकोमल देह पर अभी कठोर कोड़े बरसेंगे, हमारे मनोरथों के साथ ही तुम उन्हें सहो। यहाँ कर्कशाः कशाः में कशाः की आवृत्ति में यमक अलङ्कार है।

श्लेषालङ्कार-

वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपदभाषणस्पृशः।
श्लिष्यन्तिशब्दाःश्लेषोसावक्षरादिभिरष्टधा।।[8]

अर्थात् दो भिन्न अर्थों के बोधन के लिए अलग-अलग प्रयुक्त होने वाले शब्दों का दो वार प्रयोग न होकर एक ही वार प्रयुक्त होना प्रतीत होता है। जिससे दो शब्दों अथवा पदों का श्लेष हो जाता है। मृच्छकटिक के निम्नलिखित श्लोलों में श्लेष अलङ्कार है।

मूढ़े! निरन्तरपयोधरयामयैव, कान्तःसहाभिरमते यदि किंतवात्र।
मां गर्जितैरपिमुहुर्विनिवारयन्ती, मार्गंरुणद्धिकुपितेवनिशा सपत्नी।।[9]

यहाँ पर पूवार्द्ध में प्रयुक्त निरन्तर शब्द प्रथम- एकीभूत, दूसरे – संश्लिष्ट दो भिन्न-भिन्न अर्थों के लिए साथ ही पयोधर शब्द भी प्रथम- बादल, दूसरे स्तनों के लिए भिन्न-भिन्न प्रयुक्त होने की अपेक्षा एक ही वार उच्चरित हुए हैं। अतः यहाँ शब्दश्लेषअलङ्कार है।अन्य प्रयोग- 10.49

अर्थालङ्कार

अर्थान्तरन्यास-सामान्यंवाविशेषोवातदन्येनसमर्थ्यते।
यत्तु सोर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा।।[10]

सामान्य अथवा विशेष में से जहाँ एक दूसरे को समर्थन करे वहाँ अर्थान्तरन्यास अलङ्कार होता है।

भीमस्यानुकरिष्यामिबाहुःशस्त्रंभविष्यति।
वरंव्यायच्छतोमृत्युर्नगृहीतस्य बन्धने।।[11]

रक्षकों के द्वारा घेर लिए जाने पर आर्यक कहता है कि मैं भीम का अनुकरण करुँगा। ये हाथ ही मेरे हथियार होंगें। जेल में बन्द होने की अपेक्षा

लड़कर मर जाना ही अच्छा होगा। यहाँ पूर्वाद्ध का उत्तरार्द्ध के द्वारा समर्थन होने से यहाँ अर्थान्तरन्यासअलङ्कार है। अन्य प्रयोग- 1-11,58,4-2,21,22,23, 5-31, 6-2,17,7-4, 8-15, -29,30, 9-7,16, 10-16,43

अनुमान - अनुमानंतदुक्तंयत् साध्यवसाधनयोर्वचः।[12]

साध्य और साधन का कथन अनुमान अलङ्कार होता है। मृच्छकटिक के निम्नलिखित छन्द में इसका प्रयोग प्राप्त होता है।

वैदेश्येनकृतोभवेन्ममगृहेव्यापारमभ्यस्यता
नासौवेदितवान्धनैर्विरहितंविस्रब्धसुप्तंजनम्।
दृष्ट्वाप्राङ्महतींनिवासरचनामस्माकमाशान्वितः
सन्धिच्छेदनखिन्नएवसुचिरंपश्चान्निराशो गतः।।[13]

यहाँ दरिद्र चारुदत्त का घर में कुछ न होना साधन है। चोर का विदेशी अथवा नौसिखिया होना साध्य है इसका अनुमान हो जाता है। अतः अनुमान अलङ्कार है। साथ ही निराश होकर लौटा होगा। इसका अनुमान भी है।

अतिशयोक्ति

निगीर्याध्यवसानन्तुप्रकृतस्यपरेणयत्प्रस्तुतस्ययदन्यत्वंयद्यर्थोक्तौ च कल्पनम्।।
कार्यकारणयोर्यश्चपौर्वापर्यविपर्ययः। विज्ञेयोतिशयोक्तिः सा।[14]

अर्थात् उपमान के द्वारा उपमेय का अन्तर्भावपृथक् कथन करके जो अध्यवसान करना है वह अतिशयोक्ति समझनी चाहिए।

वज्झम्मिणीअमाणेजणश्शलोदमाणश्श।
णअणशलिलेहिंशित्तेलच्छादो ण उण्णमइलेणु।।
(वध्येनीयमानेजनस्यसर्वस्यरुदतः।
नयनसलिलसिक्तोरथ्यातो न उन्नमतिरेणुः।।)[15]

वध के लिए चारुदत्त को ले जाते समय सभी आदमी रो पड़े हैं और उनके नयनजल से गलियाँ भींग गई हैं जिससे धूलि नहीं उड़ रही है।

यहाँ दो सदृश पदार्थों में अधिक गुणी उपमान और न्यूनगुणी उपमेय होता है। यहाँ अधिक गुणी पदार्थ वर्षा है अतः उपमान हुआ, न्यूनगुणी पदार्थ आँसू हैं अतः उपमेय हुआ। यहाँ उपमान वर्षा के द्वारा उपमेय आँसू का अन्तर्भाव होने से अतिशयोक्ति अलङ्कार है। अन्य प्रयोग- 1-22,5-7,8-2,9-22,24,30, 10-10,11

अप्रस्तुत प्रशंसालङ्कार- अप्रस्तुतप्रशंसास्यात्सायत्र प्रस्तुताश्रया।[16] अर्थात् जहाँ

प्रस्तुत कथन को अप्रस्तुत कथन के द्वारा प्रतिपादित किया जाता है। वहाँ अप्रस्तुत प्रशंसालङ्कार होता है।

नान्दी के बाद सूत्रधार- (परिक्रम्यावलोक्य च) अये! शून्येयमस्मत्सङ्गीतशाला, क्वनुगताः कुशीलवाभविष्यन्ति? (विचिन्त्य) आंज्ञातम्।

शून्यमपुत्रस्यगृहं, चिरशून्यंनास्तियस्यसन्मित्रम्।
मूर्खस्यदिशःशून्याः, सर्वंशून्यं दरिद्रस्य।।[16]

इसमें अप्रस्तुत (दरिद्रता) के वर्णन से प्रस्तुत संगीतशाला की शून्यता का वर्णन होने से अप्रस्तुत प्रशंसा अलङ्कार है। अन्य प्रयोग- 1.30 के वाद विट कथन,1-31,36,37,51,2-5,12,15,3-1,2,11,4-13,14,18,19,22,5-16,36,40, 49 ,8-9, -26, 9-26,27, 40, 41,10-15,30

अप्रस्तुत प्रशंसा अलङ्कार-अप्रस्तुत प्रशंसा या सा सैवप्रस्तुताश्रया। (प्रस्तुत अर्थ की प्रतीति कराने वाली जो अप्रस्तुत की प्रशंसा है वह ही अप्रस्तुत प्रशंसा अलङ्कार है।[17]

यदा तुभाग्यक्षयपीडितांदशांनरः कृतान्तोपहितांप्रपद्यते।
तदोस्यमित्राण्यपियान्त्यमित्रतांचिरानुरक्तोऽपिविरज्यते जनः।।[18]

जब किसी का भाग्य साथ नहीं देता तो उसकी गरीबी में दोस्त भी दुश्मन हो जाते हैं अपने भी पराये हो जाते हैं तथा अनुरक्त भी विरक्त हो जाते हैं। यह अप्रस्तुत का वर्णन है। जबकि चारुदत्त और उसकी दशा प्रस्तुत है, जिसका प्रत्यक्षतः वर्णन नहीं है फिर भी उसकी प्रतीति हो जा रही है। अतः अप्रस्तुत प्रशंसा अलङ्कार है।

अर्थापत्ति - यह मीमांसा शास्त्र से लिया गया अलंकार है। इसमें दण्डपूपिका न्याय(दण्ड के लोप होने से उससे बंधे पूप अर्थात् मालपुए का लोप भी स्वतः सिद्ध है।) किसी अर्थ को सिद्ध करने में समर्थ होने से दूसरे अर्थ की प्रतीति हो जाती है।

जाणामिचारुदत्तंवसन्तसेणं अ सुट्ठुजाणामि।
पत्ते अ राअकज्जेपिदरंपि अहं ण जाणामि।।
(जानामिचारुदत्तंवसन्तसेनाञ्चसुष्ठुजानामि।
प्राप्ते च राजकार्येपतरमपि अहं न जानामि।।)[19]

यहाँ राजकार्य में तो मैं अपने बाप को भी नहीं जानता कथन से अन्य

अर्थ की प्रतीति होती है कि वाहनों को चौक करना उसका राजकार्य है इस वक्त वह जान-पहचान निकाल कर राजकार्य में स्थिलता नहीं वरत सकता।अतः अर्थापत्ति अलंकार है।

उपमालङ्कार-

साधर्म्यमुपमा भेदे।[20] पूर्णालुप्ताच्साग्रिमा। श्रौत्यार्थी च भवेद्वाक्येसमासेतद्धिते तथा।।[21]

इस अलङ्कार का प्रयोग मृच्छकटिक के निम्नलिखित श्लोकों में हुआ है-
गौरीभुजलतायत्रविद्युल्लेखेव राजते।[22]

यहाँ गौरीभुजलता उपमेय, विद्युल्लेखा उपमान, राजते साधारण धर्म, इव उपमा वाचक शब्द हैं। सभी तत्त्व उपस्थित होने से पूर्णोपमा है। यहाँ पर 'इव' के श्रवण मात्र से साधर्म्य की प्रतीति हो रही है। अतः श्रौती उपमा है।

वणिजइवभान्तितरवःपण्यानीवस्थितानिकुसुमानि।
शुल्कमिवसाधयन्तो मधुकर-पुरुषाः प्रविचरन्ति।।[23]

यहाँ उपमान वणिज, पण्यानि, शुल्कम् हैं, उपमेय- तरु, कुसुम, मधु हैं। वाचक शब्द- इव हैं। साधर्म्य- प्रतीति, स्थिति, शोधन करना हैं। उपमान तथा उपमेय में भेद है। अतः उपमा अलंकार है। अन्य भेद व प्रयोग- 1.12 एवं उससे पूर्व विदूषक संवाद- में उपमा।उपमा- 1-2,3,10,12,16,17,18,19,20, 21, 22, 28,29,31,35,46,55,2-7,3-9,4-1,722,27,28,30,5-5,13,17,20,33, 51,6-1,26,27,7-1,3,7,8,19,419-19,33,10-26,36,44,53 उपमा(लुप्ता)- 1-57,7-5,5-45,10-73उपमा(श्रौति)-1-5,7,3-6,10,17,27 4-15,26,5-14,38,44,6-2,8-15,46,10-28,39,42,47,49 उपमा(आर्थी) – 10-27 उपमा(माला) -1-23,32,49,4-17 उपमा (हतोपमा)- 1-25 उपमा (श्लेषोपमा)– 10-2

उत्प्रेक्षा- सम्भावनमथोत्प्रेक्षाप्रकृतस्यसमेन यत्।[24] अर्थात् प्रकृत (वर्ण्य उपमेय) की सम(उपमान) के साथ सम्भावना(उत्कट एक कोटिक सन्देह) उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। जैसे कि निम्न लिखित छन्द- लिम्पतीवतमोङ्गानिवर्षतीवाञ्जनं नभः।[25] में वर्ण्य उपमेय अंधेरा है तथा उपमान कालिमा है। साधर्म्यलिम्पन तथा वर्षण है। वाचक शब्द इव हैं। प्रकृत अंधेरे का उसके सम कालिख से समानता की उत्कट संभावना किये जाने से उत्प्रेक्षा अलङ्कार है। इह कृति में उत्प्रेक्षा के अन्य

प्रयोग अग्रलिखित हैं-1-20,27,33,34, 52, 3-22, 4-4,5-22,24,44,45, 10-11

रूपक- तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः। अर्थात् प्रसिद्ध भेद वाले उपमान-उपमेय का अभेद वर्णन रूपक होता है।[26]

इदं तत् स्नेहसर्वस्वंसममाढ्य-दरिद्रयोः।
अचन्दनमनौशीरं हृदयस्यानुलेपनम्।।[27]

वेटे के प्रेम का प्रधान धन से तथा शीतल लेप से भेद प्रसिद्ध होते हुए भी सादृश्य वर्णित होने से रूपक अलङ्कार है। अन्य प्रयोग- 1-36,45,57, 4-10,11, 31,6-13,8-1,38,39,9-40,10-4,5,10,13,14,23,30,33,49 रूपक (निरंगरूपक)– 8-23

काव्यलिङ्ग-काव्यलिङ्गं हेतोर्वाक्यपदार्थता।[28]

अपापानांकुले जाते मयिपापं न विद्यते।
यदि सम्भाव्यतेपापमपापेन च किं मया।।[29]

यहाँ उत्तरार्द्ध में न चारुदत्त पाप की संभावना को जीवन के औचित्यहीनता का हेतु के रूप में वर्णित होने से काव्यलिङ्ग अलङ्कार है। अन्यत्र प्रयोग- 1-26,32,37,58,2-13,3-13,24,27,30,4-3,8,20, 245-29, 40,43, 48, 6-19, 8-1,5, 8-25, 27,42, 9-4, 14, 34, 35, 37, 42, 43, 10-17, 30, 56, 10-59,61

कारणमाला - यथोत्तरं चेत्पूर्वस्य पूर्वस्यार्थस्य हेतुता। तदा कारणमाला स्यात्।[30] जहाँ अगले-अगले अर्थ के प्रति पहिले-पहिले अर्थ हेतु रूप में वर्णित हों वहाँ कारणमाला अलङ्कार होता है। उदाहरण -

दारिर्घादध्रियमेतिह्रीपरिगतःप्रभ्रश्यतेतेजसो,
निस्तेजाःपरिभूयते, परिभवान्निर्वेदमापद्यते।
निर्विण्णःशुचमेतिशोकपिहितोबुद्ध्यापरित्यज्यते,
निर्बुद्धिःक्षयमेत्यहोनिधनता सर्वापदामास्पदम्।।[31]

यहाँ गरीबी कारण है संकोच का, संकोच कारण है सामर्थ्यह्रास का, असमर्थता कारण है तिरस्कार का, तिरस्कार कारण है विरक्ति का, विरक्ति कारण है विवेक का, अविवेकिता कारण है ज्ञान शून्यता का तथा बुद्धिहीनता विनाश का कारण है। इस प्रकार सारी विपत्तियों की जड़ दरिद्रता है। यहाँ कारणों की एक

माला गुथ जाने से कारण माला अलङ्कार है।

तुल्ययोगिता नियतानां सकृद्धर्मः सा पुनस्तुल्ययोगिता।[32] नियत का एक एक धर्म के साथ सम्बन्ध होने पर वह तुल्ययोगिता अलङ्कार होता है। जैसे-

वाप्यांस्नातिविचक्षणोद्विजवरोमूर्खोपिवर्णाधमः,
फुल्लांनाम्यतिवायसोपिहिलतां या नामिताबर्हिणा।
ब्रह्मक्षत्रविशस्तरन्ति च ययानावातयैवेतरे,
त्वंवापीवलतेवनौरिवजनंवेश्यासिसर्वं भज।।

जिस सरोवर में विद्वान् नहाते हैं, उसी में नीच मूर्ख भी स्नान करते हैं। जिस लता को मयूर बैठकर झुका देता है उसी को कौए भी झुका देते हैं। जिस नौका से ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य जैसे श्रेष्ठि पार उतरते हैं उसी से शूद्र या अन्त्यज भी पार उतरते हैं। तुम भी उसी लता तथा नौका की भाँति सर्वजन सुलभ वेश्या हो, तुम्हें सबके साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

यहाँ एक सरोवर स्नान से विद्वान् व मूर्ख का, लता को झुकाने से मयूर व कौए का, एक नौका से पार उतरने से द्विजों तथा शूद्रों आदि का सम्बन्ध वर्णित होने से तुल्योगिता अलङ्कार है। अन्य प्रयोग - 51,3-14,16, 4-7, 25, 26, 6-27, 8-24

दीपकालङ्कार- वदन्तिवर्ण्यावर्ण्यानांधर्मैक्यंदीपकंबुधाः। अर्थात् प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत पदार्थों का एक धर्म से सम्बन्ध होने पर दीपकालङ्कार होता है। मृच्छकटिक में अनेक बार इस अलङ्कार का प्रयोग हुआ है।

सकृद्वृत्तिस्तुधर्मस्यप्रकृताप्रकृतात्मनाम्।
सैवक्रियासुवह्वीषुकारकस्येति दीपकम्।।[33]

आलानेगृह्यते हस्ती बाजी वल्गासुगृह्यते।
हृदयेगृह्यते नारी यदिदंनास्ति गम्यताम्।।[34]

हाथी, अश्व, नारी कारकों के साथ गृह्यते एक ही क्रियारूप का सम्बद्ध होने से क्रिया दीपक अलङ्कार है। अन्य प्रयोग-1-8,50,2-7,4-15,5-1,26

शून्यमपुत्रस्यगृहं, चिरशून्यंनास्तियस्यसन्मित्रम्।
मूर्खस्यदिशःशून्याः, सर्वंशून्यं दरिद्रस्य।।[35]

इसमें प्रस्तुत दरिद्र तथा अप्रस्तुत दरिद्रादि के शून्यता रूपी गुण की एकरूपता वर्णित होने से दीपक अलङ्कार है।

प्रतिवस्तूपमा- प्रतिवस्तूपमातु सा। सामान्यस्यद्विरेकस्ययत्रवाक्यद्वये स्थितिः।[36]

दृष्टांत -दृष्टान्तःपुनरेतेषांसर्वेषां प्रतिबिम्बनम्।[37]

जाणन्तीविहुजादितुज्झ अ ण भणामि सील-विहवेण।
चिट्ठउमहच्चिअमणेकिंहिकइत्थेणभग्गेण।।
जानन्नपिखलुजातिंतव च न भणामिशीलविभवेन।
तिष्ठतुममैवमनसिकिंहिकपित्थेन भग्नेन।।[38]

उपमान, उपमेय, उनके विशेषण तथा साधारण धर्म आदि का बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव होने पर दृष्टान्तअलङ्कार होता है। के नियम से यहाँ जाति जानते हुए भी उच्चरित करने की निरर्थकता और कैथ फोड़ने की निरर्थक क्रिया के साथ बिम्बप्रतिबिम्ब भाव होने से दृष्टांत अलंकार है। अन्य प्रयोग 6-21, 8-21, 10-20, 58

निदर्शनालङ्कार- निदर्शना। अभवन्वस्तुसम्बन्धउपमापरिकल्पकः। अर्थात् वस्तु का असम्भव/अनुपद्यमान सम्बन्ध उपमा का परिकल्पक होता है वह निदर्शना अलङ्कार होता है।[39] आलानेगृह्यते हस्ती बाजी वल्गासुगृह्यते। हृदयेगृह्यते नारी यदिदंनास्तिगम्यताम्।। हाथी खम्भे से बाँधकर, घोड़े को लगाम से, स्त्री को अनुराग से वश में किया जाता है यदि ऐसा नहीं है तो राह नापिये। यहाँ पर वसन्तसेना को वश में करना शकार के लिए असम्भव कार्य है। इस प्रकार वर्णित होने से निदर्शनाअलङ्कार है।[40] अन्य प्रयोग- 10-60

परिकर- विशेषणैर्यत्साकूतैरुक्तिः परिकरस्तुसः। विशेष्य का साभिप्राय विशेषणों से कथन करने पर परिकर अलङ्कार होता है।

दुष्टात्मापरगुणमत्सरीमनुष्यो, रागान्धःपरमिहहन्तुकामबुद्धिः।
किंयोयद्वदतिमृषैवजातिदोषात्, तद्ग्राह्यंभवति? न तद्विचारणीयम्।।[41]

संसार में दुष्ट, दूसरों के गुणों से जलने वाले पापी, कामान्ध एवं दूसरों को विनष्ट करने वाले प्राणी, अपनी दुर्बलतावश दूसरों पर जो कुछ मिथ्यारोप लगाते हैं, क्या वे विश्वासपात्र हैं? क्या ऐसे लोगों की बातों पर विचार करना न्यायसंगत है? इस कथन में दुर्बल बुद्धि दुष्ट प्राणी के पापी, कामान्धता आदि साभिप्राय विशेषणों के साथ प्रयुक्ति होने से परिकर अलङ्कार है।

पर्याय अलंकार - एकंक्रमेणानेकस्मिन् पर्यायः।[42] एक क्रम से अनेक में होता है अथवा किया जाता है। तब पर्यायालंकार होता है।

यासांबलिः सपदिमद्गृह-देहलीनां
हंसैश्च सारस-गणैश्च विलुप्त-पूर्वः।
तास्येवसप्रतिविरूढ़-तृणाङ्कुरासु
बीजाञ्जलिःपतति कीट-मुखावलीढः।।[43]

यहाँ बलि एक है पर दो तरह से दी जा रही है। एक तो देहली पर पूजा-अक्षत रखे जाते थे तब हंस और सारसों के आहार बनते थे। पूजा-अक्षत के अभाव में दूसरी तरह से बीजांजलि घास से व्याप्त देहलियों पर कीड़ों से कुतरे गए बीजों की मुट्ठी गिरती है। इस प्रकार एक बलि को अनेक अक्षत और बीजांजलि के रूप में वर्णित होने से पर्याय अलंकार है।

पर्यायोक्तिअलङ्कार - पर्यायोक्तंविना वाच्य-वाच्यकत्वेन यद्वचः।[44] अर्थात् वाच्य-वाचक भाव के बिना व्यञ्जना रूप व्यापार के द्वारा प्रकारान्तर से जो वाच्यार्थ का कथन करना पर्यायोक्त अलंकार होता है।

यासांबलिः सपदिमद्गृहदेहलीनां, हंसैश्चसारसगणैश्चविलुप्तपूर्वः।
तास्येवसम्प्रतिविरूढ़तृणाङ्कुरासु, बीजाञ्जलिःपतति कीटमुखावलीढः।।[45]

मेरे घर की देहली पर रखे गये पूजा-अक्षत पहले हंस और सारसों के आहार बनते थे, उसी घासपूर्ण हो चुकी देहली पर आजकल घुने बीजों की मुट्ठी डाली जाकी है। यहाँ व्यञ्जना व्यापार के द्वारा वाच्यार्थ दरिद्रता का कथन होने से पर्यायोक्तिअलङ्कार है।

पुनरुक्ति - एदेहिं दे दशणहुप्पलमण्डेहिंहस्तेहिं--कट्टामि दे वलतणुं---8-20 कथन में दे(ते) की पुनरावृत्ति होने से पुनरुक्ति अलङ्कार है।

पुनरुक्तिवदाभाष- भासते पुनरुक्त्येवोपाततोर्थोहियत्रसः। पुनरुक्तवदाभासोसौ भिन्नाकृतिशब्दभाव।।[46]

एतानिषिक्त-रजत-द्रव-सन्नकाशा धारा जवेनपतिताजलदोदरेभ्यः।
विद्युत्प्रदीप-शिखया क्षण-नष्ट-दृष्टाश्छिन्नाइवाम्बर-पटस्यदशाः पतन्ति।।[47]

यहाँ अम्बर और पट की पुनरुक्ति की प्रतीति होने से पुनरुक्तिवदाभाष अलङ्कार है।

परिसंख्या –किंचित्पृष्टमपृष्टंवाकथितंयत्प्रकल्पते।
तादृगन्यव्यपोहाय परिसंख्या तु सा स्मृता।।[48]

किसी पूछी गयी या न पूछी गयी बात को उसी प्रकार की अन्य वस्तुनिषेध

में पर्यवसित होने पर परिसंख्या अलङ्कार होता है। जैसे-

हत्थशंजदोमुहशंजदोइंदिअ-शंजदोशेक्खुमाणुशे।
कंकलेदिलाअउलेतश्शपललोओ हत्थे णिच्चलो।।
हस्तसंयतोमुखसंयतइन्द्रिय-संयतः स खलुमानषः।
किंकरोतिराजकुलंतस्यपरलोकोहस्तेनिश्चलः।।

यहाँ बौद्ध भिक्खु के द्वारा हाथ, मुँह तथा इन्द्रिय संयमी को ही मनुष्य कहकर लोगों के लिए हाथ, मुँह तथा इन्द्रियों को अनुशासन मुक्त छोड़ने का निषेध किया है। अतः परिसंख्या अलङ्कार है।[49] अन्य प्रयोग- 8-26,47

भ्रांतिमान्- भ्रान्तिमानन्यसंवित् तत्तुल्यदर्शने।[50] अप्राकरणिक वस्तु के समान प्राकरणिक(प्रकरण सम्बद्ध) वस्तु के देखने पर होने वाला भान-भ्रान्तिमान अलङ्कार होता है। इसमें भ्रमवाचक शब्द का प्रयोग होता है। जिससे झूठ का निश्चय(झूठ को ही सही मान लिया जाता है।) हो जाता है। भ्रम दूर करना संभव नहीं होता।

विशेषोक्ति- विशेषोक्तिरखण्डेषु-कारणेषु-फलावचः। सम्पूर्ण कारणों के होते हुए भी फल का न कहना विशेषोक्ति अलङ्कार होता है।[51]

ण हुअम्हेचाण्डालाचाण्डालउलम्मिजादपुव्वावि।
जेअहिभवन्तिशाहुंतेपावाते अ चाण्डाला।।
(न खलुवयंचाण्डालाश्चाण्डालकुलेजातपूर्वा अपि।
येऽभिभवन्तिसाधुंतेपापास्ते च चाण्डालाः।।)[52]

चाण्डाल कुल में पैदा होकर भी हम चाण्डाल नहीं हैं, असली चाण्डाल तो वे हैं जो अकारण सज्जनों को सताते हैं; वे ही पापी हैं। चाण्डाल कुल में जन्म रूपी कारण के होने पर भी चाण्डाल होने का निषेध होने पर विशेषोक्ति अलङ्कार है। 4-8,8-26,9-25,10-22,

व्याजनिन्दा- व्याजस्तुतिर्मुखेनिन्दास्तुतिर्वा रुढिरन्यथा।[54] निन्दा के बहाने से प्रशंसा अथवा प्रशंसा के बहाने से निन्दा होने पर व्याजस्तुति अलङ्कार होता है।

सिण्ण-सिलाअल-हत्थोपुरिसाणंकुच्च-गण्ठि-सण्ठवणो।
कत्तरि-वावुद-हत्थोतुमंपिसेणावईजादौ।।
(शीर्ण-शिला-तलहस्तःपुरुषाणांकूर्चच-ग्रन्थि-संस्थापनः।

कर्तृतरी-व्यापृत-हस्तस्त्वमपिसेनापतिर्जातः ।।)[55]

एक हाथ में टेवना दूसरे में उस्तरा रखने वाला नाई! तुम भी सेनापति बन गये। प्रत्यक्षतः प्रशंसा प्रतीत हो रही है लेकिन चन्दनकवीरक की खिल्ली उड़ा रहा है। अतः यहाँ व्याज स्तुति अलङ्कार है। अन्य प्रयोग- 6-23

विभावना - क्रियायाः प्रतिषेधेपि फल-व्यक्तिर्विभावना। हेतु क्रिया के प्रतिशेध होने पर भी फल की उत्पत्ति विभावना अलङ्कार है।[56]

विषादस्रस्त-सर्वाङ्गीसम्भ्रम-भ्रान्तलोचना।
नीयमानोभुजिष्यात्वंकम्पसे नानुकम्पसे।।[57]

मदनिका को छुड़ाने के लिए वसन्तसेना को ऋण चुकाने के लिए दिये गये आभूषण चारुदत्त के होने की खबर सुनते ही वसन्तसेना के साथ ही मदनिका बेहोश होने लगती है तो शर्विलक कहता है कि- मदनिके मुझ पर खुश होने के बदले डर से थर-थर काँप रही हो? घबराहट से तुम्हारी आँखें फिर रही हैं। मैं बन्धन मुक्त करा रहा हूँ और तुम नाराज हो रही हो। काँपने और घबराहट का कारण(हेतु) भय होता है जिसका प्रतिषेधबन्धनमुक्ति से हो जाता है फिर भी कंपन व घबराहट (कार्य) का होना वर्णित होने से विभावना अलङ्कार है। बन्धनमुक्ति खुशी का हेतु होते हुए भी खुश न होने पर काव्यलिङ्गालङ्कार भी है। अन्य प्रयोग- 4-8,7-9, 9-13,19,25

विषय - क्वचिद्यदति-वैधर्म्यान्नशेलेषोघटनामियात्।
कर्तुः क्रियाफलावाप्तिर्नैवानर्थश्च यद् भवेत्।।[57]

अत्यन्त वैधर्म्य के कारण उनका सम्बन्ध न होना अथवा कर्ता को क्रिया से सिद्धि न होकर अनर्थ हो जाये अथवा कार्य के गुण की विपरीतता, कारण के गुण की विपरीत होने पर विषम अलङ्कार होता है।

द्रव्यंलब्धंद्यूतेनैव दारा मित्रंद्यूतेनैव। दत्तंभुक्तंद्यूतेनैवसर्वंनष्टं द्यूतेनैव।।[58]

यहाँ द्यूतकार को अभी तक लाभ का कार्य रहे द्यूत से हानि होना वर्णित होने से विषमालङ्कार है। अन्य प्रयोग- 10-12,13

व्यतिरेकालङ्कार- व्यतिरेकोविशेषश्चेदुपमानोपमेयोः। उपमान से उपमेय का या उपमेय से उपमान का वैशिष्ट्य अर्थात् आधिक्य प्रतिपादित होने से व्यतिरेकालङ्कार होता है।

शून्यमपुत्रस्यगृहं, चिरशून्यंनास्तियस्यसन्मित्रम्।

मूर्खस्यदिशःशून्याः, सर्वंशून्यं दरिद्रस्य।।[59]

यहाँ संतान हीनता की अपेक्षा मित्रहीनता तथा मित्रहीनता की अपेक्षा मूर्खता और मूर्खता की अपेक्षा दरिद्रता की शून्या की व्यप्ति के आधिक्य वर्णित होने से यहाँ व्यतिरेकालङ्कार है।

व्यतिरेक- उपमानाद्यदन्यस्यव्यतिरेकः स एवसः। (उपमान से उपमेय का आधिक्य व्यतिरेक अलङ्कार होता है।[60]

स्त्रियोहि नाम खल्वेतानिसर्गादेवपण्डिताः।
पुरुषाणान्तुपाण्डित्यं शास्त्रैरेवोपदिश्यते।।[61]

व्यावहारिक क्षेत्र में पुरुषों की अपेक्षा औरतें अधिक चतुर होती हैं। क्योंकि पुरुषों की चतुराई तो शास्त्रोपदेश से होती है। यहाँ साधर्म्य चतुराई के मामले में उपमान(पुरुष) से उपमेय (स्त्री) का आधिक्य वर्णित होने से व्यतिरेक अलङ्कार है। अन्य प्रयोग–1-8, 2-12,4-18,19,25, 5-11

विरोधाभास- विरोधः सोविरोधेपिविरुद्धत्वेनयद्वचः। वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध की प्रतीति कराने वाला वर्णन होने पर विरोधाभासालङ्कार होता है।[62]

सुखं-हि-दुःखान्यनुभूय शोभते घनान्धकारेष्विवदीपदर्शनम्।
सुखात्तुयोयातिनरोदरिद्रतांधृतःशरीरेणमृतः स जीवति।।[63]

यहाँ दरिद्रता को ढोता हुआ व्यक्ति जीवित होते हुए भी मर जाता है। इस कथन में जीने की अपेक्षा मृत्यु के विरोध की प्रतीति वर्णित होने से विरोधाभास अलङ्कार है। अन्य प्रयोग -5-12

श्लेष- श्लेषः स वाक्येएकस्मिन्यत्रानेककार्थता भवेत्।[64] जहाँ एक ही वाक्य में अनेक अर्थ हों अर्थात् एक ही अर्थ के प्रतिपादक शब्दों के अनेक अर्थ होने पर श्लेष अलङ्कार होता है।

दिष्ट्याभोव्यसनमहार्णवादपारा।
दुत्तीर्णंगुणधृतयासुशीलवत्या।।
नावेवप्रियतमयाचिरान्निरीक्षे
ज्योस्त्नाढ्यं शशिनमिवोपरागमुक्तम्।।[65]

गुणधृतया में गुण के दो अर्थ श्लिष्ट हैं। प्रथम- रस्सी नाव के अर्थ में, द्वितीय- शीलवसन्तसेना के अर्थ में। अतः यहाँ अर्थश्लेष है। सुन्दर रस्सियों से बन्धी सुन्दर नौका से समान सद्गुणों वाली वसन्तसेना के द्वारा अपारविपत्तिसागर

से मुक्त चन्द्र के समान चारुदत्तको बहुत देर बाद देखा। यहाँ राग शब्द के भी दो अर्थ हैं चन्द्र के लिए ग्रहण तथा चारुदत्त के लिए दुःख। अन्य प्रयोग - 5-15,

सहोक्तिअलङ्कार - सा सहोक्तिःसहार्थस्यबलादेकं द्विवाचकम्।[66]

जहाँ सह शब्द के अर्थसामर्थ्य से एक पद दो पदों का वाचक हो वहाँ सहोक्ति अलङ्कार होता है।

इदानींसुकुमारेस्मिन्निःशङ्कंकर्कशाःकशाः।
तवगात्रेपतिष्यन्तिसहास्माकं मनोरथैः।।[67]

इस समय तुम्हारे सुकोमल देह पर अभी कठोर कोड़े बरसेंगे, हमारे मनोरथों के साथ ही तुम उन्हें सहो।

यहाँ सह शब्द के अथर्य सामर्थ्य से पतिष्यन्तिक्रियापद एवं कर्कशाः(कठोर) पद कशाः(कोड़ों) तथा मनोरथ दोनों के अर्थ का वाचक होने से सहोक्तिअलङ्कार है। अन्य प्रयोग–6-5, 9-36

स्वाभावोक्तिअलङ्कार- इसका लक्षण है-

स्वभावोक्तिस्तुडिम्भादेःस्वक्रियारूप-वर्णनम्। अर्थात् बालकादि की क्रिया अथवा रूप आदि का स्वाभाविक वर्णन स्वाभावोक्ति अलङ्कार होता है। मृच्छकटिक के नान्दी में समाधि का स्वाभाविक चित्रण होने से स्वाभावोक्ति अलङ्कार है- पर्यङ्कग्रन्थिबन्धद्विगुणितभुजगाश्लेषसंवीतजानो-

रन्तःप्राणावरोध-व्युपरत-सकल-ज्ञान-रुद्धेन्द्रियस्य।
आत्मन्यात्मानमेवव्यपगत-करणंपश्यतस्तत्त्व-दृष्ट्या,
शम्भोर्वःपातुशून्येक्षण-घटितलय-ब्रह्मलग्नः समाधिः।।[68]

1.7 में मृच्छकटिक प्रकरण के स्वाभाविक रूप का वर्णन होने से स्वाभावोक्ति अलङ्कार है।

स्वभावोक्तिस्तुडिम्भादेः स्वक्रियारूपवर्णनम्।[69] बालक आदि की निजी क्रिया अथवा रूप का वर्णन स्वभावोक्ति अलङ्कार है। तयोरिदंसत्सुरतोत्सवाश्रयं, नयप्रचारं, व्यवहारदुष्टताम्।

खलस्वभावंभवितव्यतां तथा, चकारसर्वंकिलशूद्रको नृपः।।[70]

यहाँ मृच्छकटिक रचना के स्वाभाविक गुणों का वर्णन होने से स्वभावोक्तिअलङ्कार है। अन्य प्रयोग- 1-1,7,4-3,5-18,50,6-3,8-11,9-12

संकरअलङ्कार- अविश्रान्तिजुषामात्मन्यङ्गाङ्गित्वंतु सङ्करः।[71] एक वाक्य में

अनेक अलङ्कारों की सापेक्ष स्थिति संकर अलङ्कार स निरपेक्ष होने पर संसृष्टि होता है।

सुखंहिदुःखान्यनुभूय शोभते, घनान्धकारेष्विवदीपदर्शनम्।
सुखात्तुयोयातिनरोदरिद्रतांधृतः शरीरेणमृतः स जीवति।।[72]

पूर्वार्द्ध में इव पद के संयोजन के साथ श्रौति उपमा तथा मृतोजीवति कथन से विरोधाभास अलङ्कार हैं तथा सुखात्तुयोयातिनरोदरिद्रतां' कथन में अप्रस्तुत व्यक्ति के कथन से प्रस्तुत चारुदत्त का प्रतिपादन होने से अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार है। ये अलंकार स्वतन्त्र न होकर अङ्गाङ्गि भाव से युक्त हैं अतः संकर अलङ्कार है। अन्य प्रयोग 1-13,15,32,2-7,3-1,4-11,16,5-1,2,3,19,42,45,8-1,9-14,25,

समुच्चय- तत्सिद्धिहोतावेकस्मिन्यत्रन्यत्तत्करंभवेत्समुच्चयोसौ।[73]

उस कार्य की सिद्धि का एक हेतु के विद्यमान रहते हुए भी अन्य हेतु भी उसका साधक हो जाये वह समुच्चय अलङ्कार होता है।

दारिर्द्यात्पुरुषस्यबान्धवजनोवाक्ये न सन्तिष्ठतेय
सुस्निग्धाविमुखीभवन्तिसुहृदः, स्फारीभवन्त्यापदः।
सत्त्वंह्रसमुपैति, शीलशशिनःकान्तिपरिम्लायते,
पापं कर्म च यत्परैरपिकृतंतत्तस्य सम्भाव्यते।।[74]

यहाँ कष्ट एक कार्य है और उसके कारण अनेक कथित होने से समुच्चय अलङ्कार है। अन्य प्रयोग-1-36,37, 3-18,28, 6-18,24, 8-27,9-10,10-59,61

समासोक्ति -परोक्तिर्भेदकैःश्लिष्टैः समासोक्तिः।[75]

श्लेष युक्त भेदक विशेषणों के द्वारा पर(अप्रकृत) के व्यवहार का कथन 'समासेनसंक्षेपेणउक्तिः' अर्थात् दो अर्थों का संक्षेप से कथन समासोक्तिअलङ्कार होता है।

एतैःपिष्टतमाल-वर्णकनिभैरालिप्तमम्भोधरैः,
संसक्तैरुपवीजितंसुरभिभिःशीतैः प्रदोषानिलैः।
एषोम्भोद-समागम-प्रणयिनी स्वच्छन्दमभ्यागता
रक्ता कान्तमिवाम्बरं प्रियतमा विद्युत् समालिङ्गति।।[76]

मेघ संगम इच्छा वाली, स्वेच्छा से आयी हुई, अनुरक्ता विद्युतप्रियतमा, पत्थरों पर कुटे तमालपत्रवत् कृष्णमेघ अनुलिप्त, एकीभूत सुरभित, शीलत-संध्या-पवन द्वारा पंखा झले जाते हुए आकाश रूपी प्रियतम का आलिङ्गन कर रही है।

यहाँ श्लेषयुक्त भेदक विशेषणों- समागमेच्छा, स्वेच्छाचारिणी, अनुरक्ता विशेषणों के द्वारा विद्युत-आकाश के समागत के समास से अप्रकृत वसन्तसेना से अपने (चारुदत्त) के समागम का कथन होने से दो अर्थों का कथन है अतः समासोक्ति अलङ्कार है। अन्य प्रयोग- 5-28,32,44,46,8-7

संदेह अलङ्कार- ससन्देहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशयः ।।[77]

उपमेय में उपमान रूप से संशय सन्देह अलङ्कार होता है।

वसन्तसेनाकिमियं द्वितीया समागतासैवदिवःकिमित्थम्।
भ्रान्तंमनःपश्यतिवाममैनांवसन्तसेना न मृतोथ सैव।।[78]

क्या यह दूसरी वसन्तसेना है या वही। चारुदत्त को रूप सादृश्य संदेह हो जाने से संदेह अलङ्कार है। इसमें संदेह वाचक शब्द 'किमियं' का प्रयोग है। जिससे झूठ का निश्चय नहीं हो पाता है। भ्रम दूर किये जाने की संभावना बनी हुई है। अन्य प्रयोग−1-36, 6-4, 7-2, 10-8,40,41

संसृष्टि- सेष्टासंसृष्टिरेतेषांभेदेनयदिहस्थितिः। काव्यप्रकाश सूत्र-206 दो या अधिक अलङ्कारों की काव्य या वाक्य में परस्पर निरपेक्ष रूप से स्थिति संसृष्टि अलङ्कार है।

क्षीरिण्यःसन्तु गावो, भवतुवसुमतीसर्वसमपन्नसस्या,
पर्जन्यःकालवर्षी, सकलजनमनोनन्दिनोवान्तुवातः।
मोदन्तांजन्मभाजः, सततमभिमताब्राह्मणाः सन्तुसन्तः
श्रीमन्तः पान्तुपृथ्वीं प्रशमितरिपवोधर्मनिष्ठाश्च भूपाः।।[79]

यहाँ सभी प्राणियों के सुख रूपी कार्य की सिद्धि के हेतु अनेक वर्णित होने से समुच्चयअलङ्कार और रिपु प्रशन श्रीमन्त होने का हेतु के साथ वर्णित होने से काव्यलिङ्ग अलङ्कार है इन दोनों के निरपेक्ष भाव से एक ही काव्य में वर्णित होने से संसृष्टि अलङ्कार है। अन्य प्रयोग-1-20,22,31,37,43,57,2-1,6, 3-3,19, 5-6, 21, 22,23,25, 8-4, 9-21,10-21,58

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाकवि शूद्रक की कृति मृच्छकटिकम् शृंगार रस से आप्लावित होने के साथ साथ यथावसर अन्य रसों से अन्वित है और अलङ्कार प्रयोग उस रस को उत्कर्ष के चरम पर पहुँचाने में मणिकांचन प्रयोग हैं। अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, काव्यलिङ्ग, अप्रस्तुत-प्रशंसा, तुल्योगिता, अर्थान्तर न्यास, संसृष्टि, संकर आदि अलङ्कारों का बहुतायत में प्रयोग

हुआ है। वक्रोक्ति, यमक, संदेह, दीपक, निदर्शना, व्यतिरेक, विरोधाभास, श्लेष, समासोक्ति, सहोक्ति, दृष्टांत, विभावना, तुल्योगिता, परिकर, परिसंख्या, भ्रान्तिमान, पर्यायोक्ति, कारणमाला आदि अलङ्कारों का भी यत्र-तत्र प्रयोग हुआ है। इन प्रयोगों से सिद्ध होता है कि महाकवि शूद्रक जितनी संजीदगी से सामाजिक मुद्दों को पिरोते हुए भावों को झकझोरते हुए भी रसिकों के आह्लाद के हिंडोले से नहीं उतरने देते साथ ही अपने अलङ्कार कौशल से चमत्कृत कर काव्यकला कौशल से परिचित कराते हैं।

सन्दर्भ -

1. काव्यप्रकाश, सूत्र-87,
2. मृच्छकटिक, 6.13,
3. काव्यप्रकाश, सूत्र-102
4. काव्यप्रकाश, सूत्र-103
5. मृच्छकटिक, 8.22
6. मृच्छकटिक, 2-1
7. मृच्छकटिक, 9.36
8. काव्यप्रकाश, सूत्र-118
9. मृच्छकटिक, 5.15
10. काव्यप्रकाश, सूत्र-164
11. मृच्छकटिक, 6.17
12. काव्यप्रकाश, सूत्र-181
13. मृच्छकटिक, 3-23
14. काव्यप्रकाश, सूत्र-152
15. मृच्छकटिक, 10.10
16. काव्यप्रकाश, सूत्र- 150
17. मृच्छकटिक, 1.8
18. काव्यप्रकाश, सूत्र-150
19. मृच्छकटिक, 1.53
20. मृच्छकटिक, 6-15
21. काव्यप्रकाश, सूत्र-124
22. काव्यप्रकाश, 87
23. मृच्छकटिक, 1.2
24. मृच्छकटिक, 7.1
25. काव्यप्रकाश, सूत्र-136
26. मृच्छकटिक, 1.34
27. काव्यप्रकाश, 138
28. मृच्छकटिक, 10.23
29. काव्यप्रकाश, सूत्र-173
30. मृच्छकटिक, 9.37
31. काव्यप्रकाश, सूत्र-185
32. मृच्छकटिक, 1-14
33. काव्यप्रकाश, सूत्र-157
34. काव्यप्रकाश, सूत्र-155
35. मृच्छकटिक, 1.50
36. मृच्छकटिक, 1.8
37. काव्यप्रकाश, सूत्र-153
38. काव्यप्रकाश, सूत्र-154
39. मृच्छकटिक, 6.21
40. काव्यप्रकाश, सूत्र-148

41. मृच्छकटिक, 1-50, 42. मृच्छकटिक, 9-27
43. काव्यप्रकाश, सूत्र-179 44. मृच्छकटिक, 1.9
45. काव्यप्रकाश, सूत्र- 174 46. मृच्छकटिक, 1.9
47. अभिराजयशोभूषणम्, सूत्र- 5-4,35 48. मृच्छकटिक, 5.4
49. काव्यप्रकाश, सूत्र-184 50. मृच्छकटिक, 8.47
51. काव्यप्रकाश, सूत्र-199 52. काव्यप्रकाश, सूत्र-162
53. मृच्छकटिक, 10.22 54. काव्यप्रकाश, सूत्र-168
55. मृच्छकटिक, 6.22 56. काव्यप्रकाश, सूत्र-161
57. मृच्छकटिक, 4.8 58. काव्यप्रकाश, सूत्र-193
59. मृच्छकटिक, 2.8 60. मृच्छकटिक, 1.8
61. काव्यप्रकाश, सूत्र-158 62. मृच्छकटिक, 4.19
63. काव्यप्रकाश, सूत्र-165 64. मृच्छकटिक, 1-10,
65. काव्यप्रकाश, सूत्र- 146 66. मृच्छकटिक, 10.49
67. काव्यप्रकाश, सूत्र-169 68. मृच्छकटिक, 9.36
69 मृच्छकटिकम्नान्दी। 70. काव्यप्रकाश, सूत्र 167
71. मृच्छकटिक, 1.7 72. काव्यप्रकाश, सूत्र-207
73. मृच्छकटिक, 1-10 74. काव्यप्रकाश, सूत्र-177
75. मृच्छकटिक, 1.36 76. काव्यप्रकाश, सूत्र-147
77. मृच्छकटिक, 5.46 78. काव्यप्रकाश, सूत्र-137
79. मृच्छकटिक, 10-40 80. मृच्छकटिकभरतवाक्यम्